मरुस्थल में गाड़े व खेती के कार्य हेतु ऊँट की क्षमता व उपयोगिता

ऊँट चालित पांच फली कल्टीवेटर

ऊँट चालित मेड निर्माणक

राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र

जोड़बीड़, शिवबाड़ी

बीकानेर-334 001 (राजस्थान)

मरुस्थल में गाड़े व खेती के कार्य हेतु ऊँट की क्षमता व उपयोगिता

आलेख:

डॉ. अमीनुद्दीन

डॉ. एम.एस. साहनी

डॉ. एफ.सी. टूटेजा

श्री नन्द किशोर

श्रीमती ममता गोयल

भाकृअनुप
ICAR

NATIONAL RESEARCH CENTRE ON CAMEL
BIKANER

राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र

जोड़बीड़, शिबवाड़ी

बीकानेर-334 001 (राजस्थान)

प्रकाशक :
डॉ. एम. एस. साहनी
निदेशक
राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र
बीकानेर-334001 (राजस्थान)

प्रकाशन :
नवम्बर-2003

मुद्रक :
आर.जी. एसोसिएट्स
बीकानेर
फोन : 0151-2527323

मरुस्थल में गाड़े व खेती के कार्य हेतु ऊँट की क्षमता व उपयोगिता

भूमिका :-

अपनी अनेक अद्‌भुत विशेषताओं के कारण ऊँट मरुस्थल का बहुउपयोगी पशु है। यह 1-2 सप्ताह तक बिना पानी पीये रह सकता है। इसका वृहद शरीर दिन की गर्मी में अपेक्षाकृत धीरे-धीरे गरम होता है। त्वचा के नीचे वसा की तह अत्यन्त पतली होने के कारण अतिरिक्त ताप को त्यागने में सुविधा रहती है। ऊँट के वक्षस्थल एवं चारों पैरों के घुटनों पर मोटी एवं कठोर त्वचा की गद्दी पायी जाती हैं, इसके अतिरिक्त कूबड मोटे होठ, नासिका रन्ध्र पर बाल, आंखों पर तीसरी पलक, मोटी घनी भोहें इत्यादि इस पशु को गर्मी में अतिरिक्त ऊष्मा त्यागने, अतिरिक्त भोजन का संचय करने, कंटीली झाड़ियों के कांटों से बचने व रेत के कणों तथा सूर्य के तेज प्रकाश से बचाने में सहयोगी होती है। इसके पैर के पंजों की हड्डियां चौड़ी, चपटी होती है और गद्देदार चमड़ी में धंसी रहती है। ऊँट के चलने पर दबाव के कारण गद्देदार पंजा फैलता है और रेत में सुदृढ़ पकड़ पैदा करता है, इस प्रकार ऊँट रेतीली भूमि पर सुगमता से चल सकता है। ऊँट में अन्य पशुओं की अपेक्षा अधिक भार खींचने की क्षमता होती है। रेगिस्तानी इलाकों में इसका उपयोग शक्ति के स्त्रोत के रूप में किया जाता है। ऐसे शुष्क वातावरण में पानी के बिना रेतीली भूमि पर बोझा ढोने, कृषि कार्य सम्पन्न करने की अद्‌भूत क्षमता के कारण ही इसे रेगिस्तान का जहाज कहा जाता है।

ऊँट व अन्य पशु गाड़ो के आय-लागत अनुपात विवरण की तुलनाः-

ऊँट गाडे से प्राप्त आय लागत अनुपात (0.96) गधा गाडी (0.92), बैल गाडी (0.71), खच्चर (0.67) व घोडा गाडी (0.49) से श्रेष्ठ आंकी गई है। सर्वेक्षण के अनुसार ऊँट गाडे से श्रमिक रु. 2-5 हजार प्रति माह कमा लेते हैं जो कि स्थान, व्यापार का क्षेत्र, मंडी आदि पर निर्भर करता है।

ऊँट का उपयोग :-

ऊँट का उपयोग मुख्यतः चार प्रकार से करने की प्रथा है।

1. ऊँट की पीठ पर सामान रख कर कम दूरी के लिये।

2. ऊँट गाड़े का उपयोग अपेक्षाकृत अधिक दूरी के लिए।
3. कृषि कार्यों में।
4. सवारी के रूप में।

प्रशिक्षण :-

ऊँट को काम में लेने से पूर्व कार्य हेतु प्रशिक्षित किया जाना आवश्यक है। प्रशिक्षण के प्रारम्भ में प्रशिक्षु ऊँट के एक पैर को मोड़कर बांध दिया जाता है। कई दिनों तक इसे इसी प्रकार बांध कर रखा जाता है। इसके अतिरिक्त ऊँट के नाक में छेद बनाकर गिरबान डाले जाते हैं तथा सूत की बनी पतली रस्सी के 4-5 मीटर लम्बे टुकड़े को गिरबान मे जोड़ देते हैं। प्राय: 3 वर्ष की उम्र से प्रशिक्षण प्रारम्भ किया जाता है। प्रशिक्षक ऊँट पर सवार होकर ऊँट की रस्सी की सहायता से काबू करते हुए सीधी रेखा में चलना सिखाता है तथा ऊँट को उठने, बैठने व चलने हेतु काम में ली जाने वाली कमाण्ड से अवगत कराता है। इसके पश्चात् ऊँट पर तांगड़ व पांजनी लगाकर खाली टायर जोड़कर, टायर पर व्यक्ति को बैठाकर, ऊँट को भार खींचने हेतु प्रशिक्षित किया जाता है। कुछ दिन टायर खींचने के प्रशिक्षण पश्चात्, ऊँट को खाली गाड़े में लगाया जाता है। गाड़े में चलाते समय ऊँट को दो रस्सियों की सहायता से काबू किया जाता है। एक रस्सी बांयी तरफ एक व्यक्ति द्वारा व दूसरी रस्सी दांयी तरफ दूसरे व्यक्ति द्वारा पकडी जाती है। कई दिनों के प्रशिक्षण पश्चात् जब ऊँट गाड़ा खींचना सीख लेता है, तब धीरे-धीरे गाड़े पर वजन बढ़ाया जाता है। हल चलाने के लिए ऊँट को मोरी की सहायता से आगे चलाते हैं तथा दूसरा व्यक्ति पीछे तांगड-पांजनी बंधे हल को पकड़े रखता है।

पीठ पर बोझा ढोने की क्षमता :-

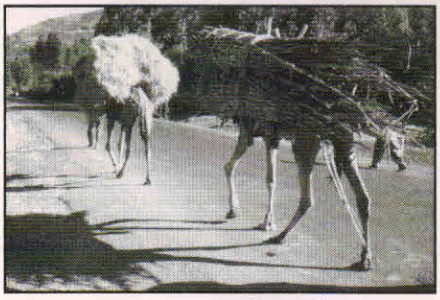

चित्र 1 : पीठ पर बोझा ढोते ऊँट

एक अध्ययन के अनुसार ऊँट की पीठ पर 50, 100, 150 व 200 किलोग्राम का भार लाद कर चलाने पर पाया गया कि इतने बोझ को लेकर ऊँट क्रमश: 5, 4, 3.5 व 3 घण्टे तक लगातार चल सकता है। ये भार ले जाते

समय इसकी गति 2 से 4 कि.मी. प्रति घण्टा के बीच रहती है। ऊँट को विश्राम देकर इन्हें पुन: काम में लिया जा सकता है। एक अन्य सूचना के अनुसार ऊँट 225-295 किग्रा वजन 3 से 4.5 कि.मी. प्रति घण्टे की रफ्तार से 32 कि.मी. का फासला प्रति दिन तय कर लेता है। एक और अन्य सूचना के अनुसार अच्छा ऊँट 400 किग्रा वजन भी छोटी दूरियों तक ले जा सकता है।

ऊँट गाड़े के रूप में :-

शोध से यह देखा गया है कि ऊँट अपने शारीरिक वजन का 2.5 से 2.8 गुणा वजन आसानी से खींच लेते हैं। औसतन 5-6 क्विण्टल वजन वाले ऊँट, ऊँट गाड़े द्वारा 12-18 क्विण्टल भार को 4 घण्टे में 20 कि.मी. तक ढो लेते हैं। दोपहर में 4 घण्टे के विश्राम के पश्चात पुन: 4 घण्टे तक अतिरिक्त कार्य लिया जा सकता है। यह देखा गया है कि दो पहियों वाले गाड़े में 15 क्विण्टल तक भार ढोने में ऊँटों को कोई विशेष कठिनाई नहीं होती। अधिक बोझा डालने पर ऊँट तीन घण्टे से अधिक काम नहीं कर पाता है। अध्ययन से यह भी देखा गया कि कच्ची सड़क व बालु मिट्टी पर न्युमेटिक टायर वाले दो पहिये के गाड़े अधिक उपयुक्त पाये गये हैं, जबकि पक्की सड़क पर जीप वाले टायर अधिक उपयुक्त पाये गये हैं। 12-18 क्विण्टल भारयुक्त गाड़े को खींचने में खिंचाव बल हाइड्रोलिक डायनमो मीटर द्वारा 90-120 किग्रा मापा गया। खिंचाव बल ऊँट के भार का 17-22 प्रतिशत तक आंका गया। अध्ययन में यह भी पाया गया कि 18 क्विण्टल भार वाले गाड़े को खींचने में जहां समतल कच्ची सड़क पर 120 किग्रा का ड्राफ्ट बल पाया गया, वहीं पक्की समतल सड़क पर इसे 81 किग्रा पाया गया। इससे यह सहज अनुमान लगाया जा सकता है कि समतल पक्की सड़क पर ऊँट अधिक भार खींच सकता है। अत: पक्की भूमि पर ऊँट अधिक वजन ढो लेता है। व्यास व वर्मा (2002) के अनुसार ऊँट अपने शरीर के भार का 26 प्रतिशत तक खिंचाव बल उत्पन्न करने वाला भार खींच सकता है, किन्तु दैनिक कार्यों हेतु 16 से 18 प्रतिशत तक खिंचाव बल उत्पन्न करने वाला भार उसके लिए उचित है।

चार चक्कों वाले ऊँट गाड़े का प्रयोग करते हुए ऊँट 2.8 किग्रा प्रतिकिग्रा शारीरिक वजन का भार खींचते हुए 25.5 कि.मी. दूरी तय कर लेते

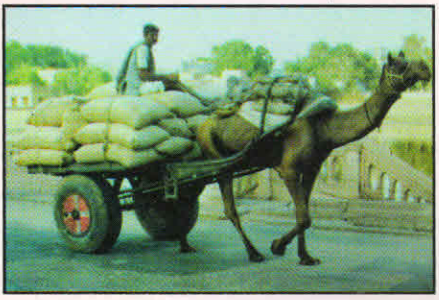

चित्र 2 : न्युमेटिक टायर वाली दो पहियों की ऊँट गाड़ी

चित्र 3 : जीप टायर चक्के वाली दो पहियों की ऊँट गाड़ी

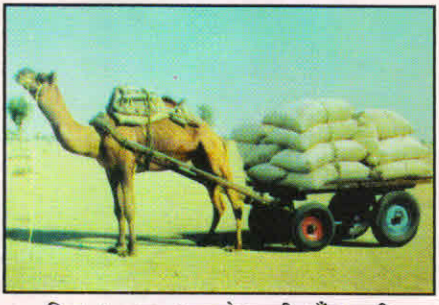

चित्र 4 : चार चक्के वाली ऊँट गाड़ी

हैं। चार चक्कों वाले ऊँट गाड़े का प्रयोग करते हुए ऊँटों को 2.5 किग्रा प्रतिकिग्रा शारीरिक वजन का भार खिंचवाने पर पाया गया कि वे तीन घण्टे कार्य करके 11.66 किमी दूरी तय कर लेते हैं। 4-5 घण्टे के विश्राम उपरान्त इनसे 3 घण्टे पुनः कार्य लिया जा सकता है। चार चक्कों वाले ऊँट गाड़े पर ऊँट को दो चक्कों की तुलना में कम कष्ट पहुंचता है। तेज गर्मी के महीनों में शुष्क क्षेत्रों में जहाँ तापमान 42^0 से. 46^0 सेल्सियस तक पहुंच जाता है बोझा ढोने का कार्य सुबह 4 घण्टे व शाम को 4 घण्टे किया जाता है व दोपहर मे 3 से 4 घण्टे ऊँट को पेड़ की छांव में विश्राम दिया जाता है।

खींचने की क्षमता में प्रयोग में लाई जा रही केमल हारनेस का भी प्रभाव पड़ता है। एक अध्ययन में पाया गया कि रेवाड़ी किस्म की केमल हारनेस बीकानेरी व उदयपुर किस्म की हारनेस से अधिक उत्तम है। जहाँ रेवाड़ी किस्म की हारनेस से 18-20 प्रतिशत ड्राफ्ट बल उत्पन्न हो सका, वहीं बीकानेरी हारनेस में 10-12 प्रतिशत ड्राफ्ट बल उत्पन्न हुआ।

ऊँट सवारी :-

चित्र 5 : ऊँट सवारी

यह देखा गया है कि सवारी के रूप में सामान्यतया ऊँट 30-40 कि.मी. दूरी प्रतिदिन तय कर लेता है। कुछ ऊँट दिन में जरूरत के समय 70 कि.मी. तक की दूरी तय कर लेते हैं।

खुराक :-

बोझा ढोने वाला एक वयस्क ऊँट करीब 14 किलो चारा (मोठ, ग्वार, चना, मूंगफली चारा) व 2 किलो दाना खा लेता है।

कृषि कार्यों में उपयोगिता :-

बालु रेतीली मिट्टी में ऊँट का उपयोग कृषि कार्यों हेतु लगभग 30 प्रतिशत छोटे व सीमान्त किसानों द्वारा किया जाता है, और कुछ क्षेत्रों में उपयोग अपेक्षाकृत बहुत कम हो रहा है। ज्यादात्तर परिवार ट्रेक्टर द्वारा खेती करते हैं, परन्तु कुछ जमीन उनको भी ऊँटों द्वारा जोतनी पड़ती है, टिब्बे वाली जमीन पर तो ऊँटों से ही जुताई करनी पड़ती है, वहाँ ट्रैक्टर से जुताई सम्भव नहीं है। आंधी आने से बुर जाय तो दोबारा ऊँट से ही जुताई करनी पड़ती है। कुछ परिवार ऊँटों से ही खेती करतें हैं, देशी हल व दो हल ही प्रयोग में लाये जाते हैं। मूंगफली में पहले जमीन ट्रेक्टर द्वारा पोली करते हैं, उसके बाद बिजाई ऊँटों द्वारा ही करते हैं।

ऊँट के द्वारा 3-4 बीघा जमीन की जुताई एक दिन में की जा सकती है। अधिक परिश्रम करने पर 6 बीघा तक जुताई सम्भव है। ट्रेक्टर द्वारा पोली की गई जमीन में जब मूंगफली की बिजाई ऊँट द्वारा की जाती है तो दिन में 1.5 बीधा की बिजाई ही सम्भव है।

ऊँट व ट्रेक्टर द्वारा कृषि का तुलनात्मक विवरण :-

	ट्रेक्टर	ऊँट
1.	कार्य तेजी से सम्पन्न हो जाता है।	कार्य अपेक्षाकृत धीमी गति से होता है
2.	बीज कम गहराई तक जाते हैं।	बीज अधिक गहराई तक जाते हैं।

3.	कम गहराई पर पानी की कमी आ सकती है	पानी की कमी कम आती है।
4.	क्षेत्र की प्राकृतिक घासे व झाड़ियां नष्ट हो जाते हैं इससे भूमि की उर्वरा शक्ति कम हो जाती है।	प्राकृतिक घासें व झाड़ियां सुरक्षित रहते हैं मिट्टी की उर्वरा शक्ति बनी रहती है।
5.	बीज की खपत ज्यादा होती है।	बीज की खपत कम होती है।
6.	मजदूरी कम लगती है	मजदूरी ज्यादा लगती है।
7.	जहाँ ट्रेक्टर आठ उमरा काटता है	वहीं ऊँट 16 उमरा काटता है।
8.	बरानी खेती में मिट्टी का कटाव बढ़ जाता है।	मिट्टी का कटाव कम होता है।

ऊँट के कृषि कार्यों में अपेक्षाकृत कम उपयोग किये जाने के सम्भावित कारण निम्न हैं-

1. किसानों को ऊँट शक्ति के उपयोग की तकनीकी जानकारी की कमी होना।
2. ऊँट की क्षमता के अनुसार कृषि उपकरणों का अभाव होना।
3. पानी की कमी के कारण सभी ऋतुओं में फसल न ले पाना।

वर्तमान में हल तथा परम्परागत उपकरण जैसे पटेला रेगिस्तानी क्षेत्रों में चलाये जा रहे हैं। व्यास व वर्मा (2002) के अनुसार पशु ऊर्जा चलित सीड ड्रिल, हैरो तथा कल्टीवेटर एवं अन्य उपकरण भी ऊँट शक्ति का उपयोग कर सफलतापूर्वक चलाये जा सकते हैं जो प्राकृतिक वनस्पति व स्थानीय घासों, छोटे पेड़ों व झाड़ियों को बचाने के साथ पर्यावरण के लिये भी उपयोगी है।

जुताई क्षमता :-

एक हल : केन्द्र में अनुसन्धान द्वारा देखा गया है कि ऊँट लगातार 4.25 घण्टे तक खेत में जुताई कर सकते हैं, और इस दौरान वे 3136 वर्ग मीटर क्षेत्रफल जोत लेते हैं। प्रति घण्टे औसत जुताई 740.6 वर्ग मीटर आंकी गई। हल द्वारा जुताई की भूमि की गहराई 9-15 सेमी आंकी गयी। हल क्षैतिज तल से 21^0 का कोण बनाता है। ऊँट इस प्रक्रिया के दौरान 9.24 से 16.91 प्रतिशत (औसत 14.01 प्रतिशत) का ड्राफ्ट बल उत्पन्न करते हैं। इस दौरान 1.10 अश्व शक्ति (0.78 से 1.32) का उत्पादन होता है। प्रति 100 किग्रा वजन पर जुताई क्षमता 523.28 वर्ग मीटर आंकी गई (सीमांकन 483-586 मी^{2} प्रति 100 किग्रा)।

चित्र 6 : दुफाली हल

चित्र 7 : छः डिस्क हैरो

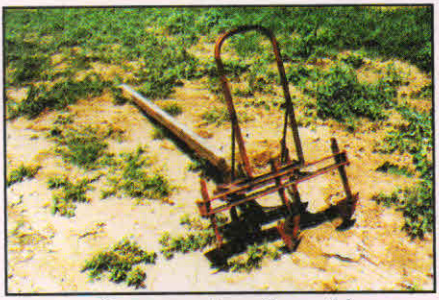

चित्र 8 : पांचफली कल्टीवेटर

चित्र 9 : मेड निर्माणक

दुफाली हल : दुफाली हल का उपयोग करने पर यह पाया गया कि ऊँट लगातार औसतन 4 घण्टे कार्य कर 4000 वर्ग मीटर क्षेत्रफल में जुताई कर सकता है। विश्राम देने के बाद दिन के अन्तिम प्रहर में इससे पुनः इतना कार्य करवाना और सम्भव है।

छः डिस्क हैरो : हैरो को उपयोग करने पर यह पाया गया कि ऊँट लगातार इसे औसतन एक घण्टे चला पाता है तथा 2000 वर्ग मीटर क्षेत्रफल में जुताई कर सकता है।

पांचफली कल्टीवेटर : पांचफली कल्टीवेटर का उपयोग करने पर पाया गया कि ऊँट लगातार इसे एक घण्टे तक नहीं चला पाता है। हैरो व कल्टीवेटर दोनों उपकरण ऊँट के हिसाब से कुछ भारी लगते हैं फिर भी छोटे कार्य के लिए इनकी उपयोगिता बनी रहेगी। विशेष तौर से समतल नहरी सिंचित भूमि के लिए ये अधिक उपयोगी प्रतीत होते हैं।

मेड निर्माणक : मेड निर्माणक का उपयोग कर प्रति घण्टा 3500 से 4000 मीटर लम्बी मेड का निर्माण करवाया जा सकता है।

जुताई के दिनों में खुराक :-

जुताई के दिनों में ऊँट पालक ऊँट को चारे के अलावा आधा किलो मीठा तेल व गुड प्रतिदिन देते हैं। इसके अलावा मोठ दाल (1-2 किलो प्रतिदिन), बाजरी का आटा (1 से 1.5 किलो), फिटकरी 250 ग्राम प्रतिदिन चार दिन तक, घी-तेल 10-10 किलो तक प्रतिदिन आधा किलो की दर पर दूध प्रतिदिन 3 किलो तक दिया जाता है।

तालिका संख्या 1 में ऊँट चलित कृषि उपकरण व उनके सम्भावित उपयोगों के बारे में जानकारी जुटाई गयी है।

तालिका संख्या 1

ऊँट चालित कृषि उपकरण व उनके सम्भावित उपयोग

उपकरण	कार्य
देशी हल	रेतीली मिट्टी में खेत की जुताई व बिजाई
दुफाली	इन्टरकल्चरल (Plough) ऑपरेशन व सीडबेड प्रिपरेशन
त्रिफाली	इन्टरकल्चरल (Plough) ऑपरेशन व सीडबेड प्रिपरेशन
मोल्डेड ब्लेड हल	टिलेज ऑपरेशन
डिस्क हेरो	द्वितीय टिलेज फार्म ऑपरेशन
5-टाईन कल्टीवेटर	भूमि की परत को खोदना व सीडबेड प्रिपरेशन व बिजाई, खरपतवार दूर करना
ब्लेड हेरो	सीडबेड प्रिपरेशन
बण्ड फोरमर	खेत की मेड बनाने के लिए
रिजर	खेत में खाले या चैनल, अर्थिंग और अन्य समान ऑपरेशन

अध्ययनों द्वारा यह देखा गया है कि देशी हल, दुफाली तथा त्रिफाली में त्रिफाली को खींचने में अधिक बल लगाना पड़ता है। (देशी हल 43.32 केजीएफ, दुफाली 44.88 केजीएफ व त्रिफाली 59.38 केजीएफ) परन्तु ऊँट त्रिफाली के खिंचाव बल को खींचने की क्षमता रखता है। त्रिफाली के लिए आवश्यक इकाई बल देशी हल की तुलना में कम आंकी गयी (0.221 किग्रा प्रति सेमी^{2} व 0.248 किग्रा प्रति सेमी^{2}) है। जबकि प्रभावी जोत क्षमता

त्रिफाली के लिए देशी हल की तुलना में 2.5 गुणा आंकी गयी है। अत: यह निष्कर्ष निकाला गया कि ऊँट देशी हल, दुफाली व त्रिफाली जैसे उपकरणों को खींच सकता है तथा त्रिफाली अधिक कार्य दक्षता रखती है।

तालिका संख्या 2 में यह दर्शाया गया है कि कल्टीवेटर व मोल्डेड ब्लेड प्लाऊ हेतु खिंचाव बल डिस्क हेरो, रिजर, बण्ड फोरमर व ब्लेड हेरो की तुलना में अधिक पाया गया। आवश्यक इकाई बल ब्लेड हेरो में न्युन्तम, डिस्कहेरो, कल्टीवेटर, बण्ड फोरमर, मोल्डेड ब्लेड प्लाऊ व रिजर में उससे अधिक आंकी गयी। कल्टीवेटर तथा डिस्क हेरो की प्रभावी जोत क्षमता अधिकतम आंकी गयी जबकि ब्लेड हेरो, रिजर तथा मोल्डेड ब्लेड प्लाऊ की प्रभावी जोत क्षमता अपेक्षाकृत कम आंकी गयी।

तालिका संख्या 2

उन्नत कृषि उपकरणों से सम्बन्धित आंकडे

उपकरण	खिचाव बल के.जी.एफ.	प्रभावी जोत क्षमता है./घ.	इकाई बल के.जी/सेमी^{2}
कल्टीवेटर	85.38	.158	0.122
मोल्डेड ब्लेड प्लाऊ	82.67	.045	.247
डिस्क हेरो	65.89	.148	.100
रिजर	42.67	.055	.440
बण्ड फोरमर	17.91	-	.158
ब्लेड हेरो	33.75	.056	.146

थकान के लक्षण

गाडा खींचने के प्रथम घण्टे के दौरान जल्दी-जल्दी मल व मुत्र करना, आंखों में पानी, मुंह में झाग आदि निकलते हैं। 3 घण्टे की अवधि पर पोल ग्रन्थि के बहाव में वृद्धि हो जाती है। 3 घण्टे पश्चात ऊँट चलने में असमर्थता दिखाता है, चौथे घण्टे में ऊँट बैठ जाता है, तथा उसकी चाल में लडखडाना व मांसपेशियों में खिंचाव जैसे लक्षण दिखाई देते हैं।

निष्कर्ष :-

1. ऊँट सामग्री परिवहन करने का उत्तम साधन है, सामग्री जैसे धास- चारा, अन्न, दाना, पानी की टंकी, बजरी, ईंट, सीमेण्ट, टाइल्स, पट्टियाँ व ऐसे ही विविध कार्य।
2. ऊँट सवारी या गाड़े में भी मनुष्यों को लाने ले जाने का उत्तम साधन है।
3. ट्रेक्टरों व उससे संचालित उपकरणों की तुलना में (सेवण, धामण, डचांब) बरानी खेती में ऊँटों की जुताई से स्थानीय उपलब्ध घासों, झाड़ियों (पाला, फोग, बुई खींप) व अन्य वनस्पतियों को बचाकर पशुओं के लिए अकाल व कम वर्षा के समय अतिरिक्त चारा उत्पादन किया जा सकता है जो कि भविष्य में न केवल पशुधन को बचाने व उत्पादन में लाभकारी तथा मिट्टी की नमी व उर्वरा शक्ति रखने में भी लाभकारी होगा।
4. एक हल, दो हल, तीन हल व मेड निर्माणक तो ऊँट आसानी से चला पाते हैं, हैरो व पांचफली कल्टीवेटर खींचने में ऊँट के लिए अपेक्षाकृत भारी पाये गये हैं।
5. टिब्बे वाली जमीन की जुताई ट्रेक्टर से नहीं हो पाती, इसके लिए ऊँट का प्रयोग करना ही पडता है। मूंगफली व चनों की बिजाई ऊँटों से सम्भव है।
6. आंधी से बुर जाये तो दुबारा बिजाई ऊँटों से ही सम्भव है।
7. ऊँटों से बिजाई में बीज की खपत कम होती है।
8. ऊँटों से बिजाई की गयी फसल में पानी की कमी कम आती है।

❖ ❖ ❖

ऊँट चालित हैरो

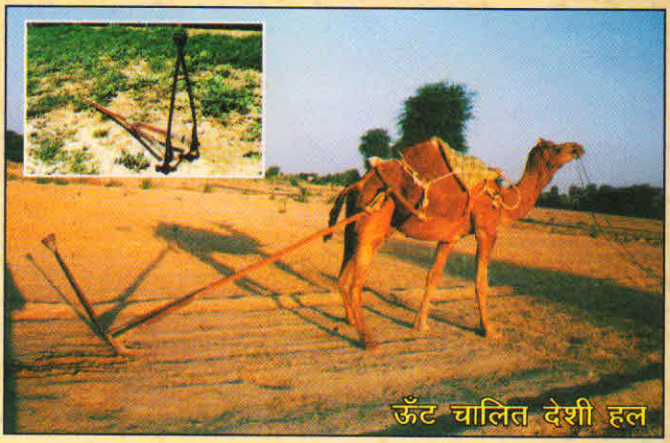

ऊँट चालित देशी हल